सुजीत कुमार

आधुनिकता की चमक और पर्यावरण संरक्षण की चेतावनी

मानव इतिहास में आधुनिकता को प्रगति का पर्याय माना गया है। जैसे–जैसे मनुष्य ने विज्ञान और तकनीक के माध्यम से प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित किया, वैसे–वैसे उसने स्वयं को शक्तिशाली और सुरक्षित समझना शुरू कर दिया। आधुनिकता ने जीवन को तेज़, सुविधाजनक और भौतिक रूप से समृद्ध बनाया, परंतु इसी प्रक्रिया में पर्यावरण को सबसे अधिक क्षति पहुँची। आज आधुनिकता और पर्यावरण संरक्षण के बीच उत्पन्न टकराव केवल वैचारिक नहीं, बल्कि अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न बन चुका है।

आधुनिक समाज की सबसे बड़ी विशेषता है— उपभोग की निरंतर बढ़ती प्रवृत्ति। आवश्यकता और विलासिता के बीच की रेखा धुंधली हो चुकी है। मनुष्य अब प्रकृति से उतना नहीं लेता जितना आवश्यक हो, बल्कि जितना संभव हो उतना संग्रह करता है। जंगलों को विकास की बाधा, नदियों को संसाधन और पहाड़ों को मात्र खनिज भंडार समझा जाने लगा है। यही दृष्टिकोण पर्यावरणीय संकट की जड़ में है।

तेज़ औद्योगीकरण और शहरीकरण ने पर्यावरणीय संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। शहर फैलते जा रहे हैं, गाँव सिमटते जा रहे हैं और हरियाली कंक्रीट में बदलती जा रही है। कारखानों की चिमनियों से निकलता धुआँ, वाहनों का शोर और जहरीली गैसें वातावरण को दूषित कर रही हैं। आधुनिकता की यह दौड़ न केवल प्रकृति को घायल कर रही है, बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है।

जलवायु परिवर्तन आधुनिक विकास का सबसे खतरनाक परिणाम है। मौसम का असंतुलन, असमय वर्षा, सूखा, बाढ़ और बढ़ता तापमान यह संकेत दे रहे हैं कि पृथ्वी अब चेतावनी दे रही है। हिमनदों का पिघलना और समुद्र–स्तर का बढ़ना भविष्य के भयावह संकेत हैं। यह स्पष्ट है कि यदि आधुनिकता की दिशा नहीं बदली गई, तो इसका मूल्य आने वाली पीढ़ियों को चुकाना पड़ेगा।

पर्यावरण संरक्षण आज किसी एक देश या समुदाय का विषय नहीं रहा। यह वैश्विक जिम्मेदारी बन चुका है। किंतु समस्या यह है कि आधुनिक समाज तात्कालिक लाभ को प्राथमिकता देता है और दीर्घकालिक परिणामों की अनदेखी करता है। विकास की योजनाएँ बनाते समय पर्यावरणीय प्रभावों को अक्सर गौण मान लिया जाता है, जो आगे चलकर विनाशकारी सिद्ध होता है।

भारतीय दृष्टिकोण से देखें तो पर्यावरण संरक्षण हमारी सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा रहा है। प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व का विचार हमारी परंपराओं में निहित है। पेड़, नदी, पर्वत और

भूमि को पूजनीय माना गया। परंतु आधुनिक जीवनशैली ने इस संवेदनशीलता को कमजोर कर दिया। आज आवश्यकता है कि आधुनिकता को अपनी जड़ों से जोड़ा जाए।

यह मान लेना भी उचित नहीं कि आधुनिकता और पर्यावरण संरक्षण एक–दूसरे के विरोधी हैं। समस्या आधुनिकता की नहीं, उसकी दिशा की है। यदि तकनीक का उपयोग प्रकृति–सम्मत तरीकों से किया जाए, तो वही आधुनिकता पर्यावरण की रक्षक बन सकती है। स्वच्छ ऊर्जा, हरित तकनीक, जैविक कृषि, जल संरक्षण और अपशिष्ट प्रबंधन इसके सशक्त उदाहरण हैं ।

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नीतियों से संभव नहीं है। यह व्यक्ति की सोच और जीवनशैली से जुड़ा प्रश्न है। ऊर्जा की बचत, जल का संयमित उपयोग, प्लास्टिक से परहेज और प्रकृति के प्रति सम्मान—ये छोटे–छोटे कदम बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। जब नागरिक जागरूक होंगे, तभी आधुनिकता मानवीय और संतुलित बनेगी। शिक्षा की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि बच्चों को प्रारंभ से ही प्रकृति के महत्व और संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाया जाए, तो भविष्य की आधुनिकता अधिक जिम्मेदार होगी। पर्यावरणीय मूल्य केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर व्यवहार का हिस्सा बनने चाहिए।

अंततः आधुनिकता बनाम पर्यावरण संरक्षण का प्रश्न वास्तव में चयन का प्रश्न है—अंधी प्रगति या विवेकपूर्ण विकास। मानव को यह समझना होगा कि प्रकृति के बिना आधुनिकता का कोई अस्तित्व नहीं है। जब विकास प्रकृति के साथ सामंजस्य में होगा, तभी वह टिकाऊ और सार्थक कहलाएगा। यही संतुलन मानव सभ्यता को सुरक्षित भविष्य की ओर ले जा सकता है।

लेखक परिचय –सुजीत कुमार,

शोधार्थी, इतिहास विभाग

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर

पता –सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश